रॉनी की बाइबल

एच.आई.वी. और
एड्स से पीड़ित
लोगों के लिये अनुशंसित

रॉनी की बाइबल

एच. आई. वी. और
एड्स से पीड़ित लोगों
के लिये अनुशंसित

प्रकाशक

द बाइबल सोसायटी ऑफ इण्डिया
'लोगोस', 206 महात्मा गाँधी रोड
बंगलौर - 560 001, भारत

RONNIE'S BIBLE
HINDI
Recommended for People Living with HIV and AIDS
20A 0203/2007/20M PB
ISBN: 81-221-2542-5

© All rights reserved.
Written permission must be secured from the Publisher to reproduce any part of this book except for brief quotations in reviews and articles.

Published by :
THE BIBLE SOCIETY OF INDIA
'LOGOS' 206, Mahatma Gandhi Road
Bangalore - 560 001, INDIA

Printed at :
Swapna Printing Works Pvt. Ltd.
Kolkata, India
E-mail : spw@cal.vsnl.net.in

प्रस्तावना

भारतवर्ष के सौ करोड़ लोगों में एच.आई.वी. और एड्स की महामारी का प्रसार भौचक्का कर देनेवाला है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि आज भारतवर्ष में एच.आई.वी. और एड्स से ग्रस्त लोगों की संख्या संसार में दूसरे स्थान पर आती है। यह वास्तव में विस्मयकारी है!

लोग जो एच.आई.वी. और एड्स से पीड़ित (पी.एल.एच.ए.) हैं वे समाज से बहिष्कृत हैं और अधिकतर मामलों में उनके परिवार ने ही उन्हें छोड़ दिया है। इससे अधिक वे अपनी नौकरी खो बैठे हैं, उनके पास कोई सम्पत्ति नहीं है, जीवन-यापन के लिये उनके पास रुपये-पैसे नहीं हैं, और उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता जिनका कोई मूल्य हो, महत्त्व और मान-मर्यादा हो। जब यह सत्य एच.आई.वी. और एड्स से ग्रस्त और पीड़ित व्यक्ति के सामने प्रगट होता है तो वे किसकी ओर मुड़ते हैं? उसके सामने केवल एक ही द्वार होता है जिसे वे खटखटा सकते हैं – अर्थात् परमेश्वर की ओर मुड़ें और सहायता को खोजें।

बहुत सी ऐसी सरकारी और गैर-सरकारी दोनों ही प्रकार की संस्थाएँ हैं जो इन लोगों के मध्य में अथक कार्यरत हैं ताकि एक आशा के साथ जीवन जीने में उनकी सहायता कर सकें। परन्तु इन सारी संस्थाओं और व्यक्तियों का एकजुट प्रयास उन्हें वह आशा नहीं दे सकता जो परमेश्वर का वचन, बाइबल, देता है।

बाइबल ही एकमात्र ऐसी साथी है जिस पर आशा, सहायता, सान्त्वना और आनन्द पाने के लिये पी.एल.एच.ए. निर्भर रहता है। उनके मनों में बहुत से नाज़ुक सवाल उठते हैं जिनके जवाबों की उन्हें जरूरत होती है, विशेष करके उस समय जब उन्हें बहुत कम या बिलकुल भी पास्टरीय देखरेख प्राप्त नहीं होती। रॉनी की बाइबल विशेष रूप से पी.एल.एच.ए. को ध्यान में रख कर तैयार की गई है।

रॉनी एक मसीही परिवार में पैदा हुआ जबान, कुशाग्र-बुद्धि और सुन्दर राजनयिक था। वह इससे ग्रस्त था और नहीं चाहता था कि कोई इसके बारे में जाने। सम्भवतः वह अपने अभिमान को बनाए रखना चाहता था, जो व्यक्तियों,

परिवारों और समूहों के स्वाभिमान की सुरक्षा को दर्शाता है। उसने सोचा कि यह बीमारी किसी तरह से चली जाएगी। जब उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, तब वह एक काउन्सलर या सलाहकार के सम्पर्क में आया और फिर उसी समय से बाइबल के साथ उसकी यात्रा आरम्भ हुई।

रेव्ह डैनिएल प्रेमकुमार जैसे परमेश्वर के सेवकों ने ऐसे ग्रसित और पीड़ित लोगों के साथ जीवन-यात्रा में उनकी आत्मिक आवश्यकताओं और अनुभवों को पहचाना और साथ ही साथ अन्य लोगों के ऐसे ही अनुभवों को जाना, जिसका परिणाम यह प्रयास है कि उन्हें वह सान्त्वना, सलाह और आशा प्रदान की जा सके जो परमेश्वर का वचन देता है।

रॉनी की बाइबल परमेश्वर के सान्त्वना, सहारे, सामर्थ्य, शान्ति और आशा के संदेश को अनिश्चितता और दुःख के बीच पी.एल.एच.ए. तक पहुँचाने का प्रथम साहसिक प्रयास है।

पासबानों, काउन्सलरों, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों और सेवकों को भी बाइबल की ऐसी सामग्री की आवश्यकता है जिसे वे पी.एल.एच.ए. की सहायता के लिये प्रयोग कर सकें।

बाइबल के परिच्छेदों का चुनाव पी.एल.एच.ए. के जीवनों में मार्गदर्शक घटकों को दर्शाता है। जहाँ मानव जीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है; मानव मूल्य, महत्व और मान-मर्यादा समाप्त हो गई है; मानव रिश्तों का बन्धन बिगड़ गया है; जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आ गई हैं जहाँ आशा या चंगाई की कोई झलक दिखाई नहीं पड़ती; जहाँ बदनसीबी की भावनाएँ मानव आत्मा को छा लेती हैं - पी.एल.एच.ए. के जीवनों में ये ही मार्गदर्शक घटक बन गए हैं। बाइबल के वे परिच्छेद जो इन चुनौतियों के बहुत निकट आते हैं वे ही रॉनी की बाइबल को बनाते हैं।

हम रेव्ह आर डैनिएल प्रेमकुमार, डॉ डेज़ी धर्मराज - एड्स डेस्क के डाइरेक्टर और डॉ के एम श्यामप्रसाद - यूनाइटेड इवेन्जलिकल लूथरन चर्च ऑफ़ इण्डिया (यू.ई.एल.सी.आई.) के नेशनल लूथरन हेल्थ एवं मेडिकल बोर्ड के एक्ज़ीक्यूटिव डाइरेक्टर को हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं, जिनके तीक्ष्ण

अवलोकन के बिना जो पी.एल.एच.ए. के बीच के गम्भीर रोगियों की लम्बे समय से समर्पित सेवा के द्वारा उन्हें प्राप्त हुआ था, यह बाइबल व्यावसायिक दक्षता के अपने वर्तमान स्तर में प्रकाशित नहीं की जा सकती थी।

जो लोग सहायता और सान्त्वना पाने के लिये परमेश्वर के वचन की ओर मुड़ते हैं उन लोगों के लिये, रॉनी की बाइबल इसे और भी आसान और प्रासंगिक बना देती है।

हम आशा करते हैं कि यह प्रकाशन पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुँचेगा जहाँ पी.एल.एच.ए. निवास करते हैं और उन्हें इस प्रकार से सामर्थी बनाएगा जैसा परमेश्वर उन्हें बनाना चाहता है।

महासचिव

बाइबल सोसायटी ऑफ़ इण्डिया

फुट नोट

1) HIV- एच. आई. वी. = ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएन्सी वायरस (एड्स फैलाने वाला वायरस)
मानवीय असंक्रम्यरोग्य अभावग्रस्त (कमीयुक्त) वायरस

2) AIDS - एड्स = अक्वॉयर्ड इम्यूनडेफिशिएन्सी सिन्ड्रोम
उपार्जित असंक्रम्य कमी वाला लक्षण-समष्टि

3) PLHA - पी. एल. एच. ए. = पीपुल लिविंग विथ एच. आई. वी. एण्ड एड्स
एच. आई. वी. और एड्स से पीड़ित लोग

1. बाइबल में सृष्टि का वर्णन ... 1
2. आदम और हव्वा आज्ञा तोड़ते हैं ... 1
3. यूसुफ यौन परीक्षा का विरोध करता है ... 2
4. परमेश्वर मूसा को बुलाता है ... 5
5. मूसा का गीत ... 7
6. मरियम का गीत ... 9
7. कड़वा पानी मीठे पानी में बदला गया ... 10
8. प्रभु आकाश से भोजन बरसाता है ... 11
9. चट्टान से पानी बह निकलता है ... 13
10. समुदाय में रहने के लिए आज्ञाएँ ... 14
11. सब के लिए न्याय और निष्पक्षता ... 16
12. याजकीय आशीर्वाद ... 19
13. मरियम का कोढ़ी हो जाना ... 19
14. ख़तरों से छुड़ाए गए ... 21
15. प्रभु को भुला मत देना ... 22
16. प्रभु आपसे क्या मांग करता है ... 24
17. दरिद्र और ग़रीब के प्रति उदार बनो ... 25
18. हन्ना की प्रार्थना ... 27
19. शाऊल और योनातान की स्मृति में दाऊद का बिलापगीत ... 28
20. अम्नोन अपनी बहन तामार का बलात्कार करता है ... 30
21. प्रभु बिधवा के लिए प्रावधान करता है ... 32
22. एलीशा मृत लड़के को जिला उठाता है ... 34
23. सुलैमान की बुद्धि ... 36
24. नामान की चंगाई ... 37

25. नहेम्याह उसके लोगों के लिए प्रार्थना करता है ... 40
26. अय्यूब के बच्चों और सम्पत्ति का नाश ... 41
27. अय्यूब का भयानक बीमारी से पीड़ित होना ... 43
28. अय्यूब का अपने जन्म-दिवस को धिक्कारना ... 44
29. अय्यूब का अपने दुर्भाग्य पर शोक मनाना ... 47
30. मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ ... 49
31. अय्यूब वेदना में पुकार उठता है ... 51
32. यहाँ तक कि मेरे परिवार ने मुझे छोड़ दिया है ... 52
33. मृत्यु की छायाएँ हमें अभिभूत (पराजित) करती हैं ... 53
34. अय्यूब के समृद्धि का जीर्णोद्धार ... 54
35. हे प्रभु कब तक! ... 57
36. दाऊद का स्तुति का गीत ... 58
37. प्रभु का वचन सिद्ध है ... 59
38. तेरी व्यवस्था मेरा आनन्द है ... 60
39. प्रभु मेरा चरवाहा (यहोवा मेरा चरवाहा) है ... 62
40. प्रभु मेरा उद्धार है (परमेश्वर मेरी ज्योति मेरा उद्धार) ... 63
41. दाऊद सहायता के लिए स्तुति करता है ... 65
42. प्रभु मुझे मेरे भयों से छुड़ाता है ... 65
43. अपने आप खोजकर देखो कि प्रभु भला है ... 67
44. मैं अपने पाप के लिए दुःखी हूँ ... 68
45. प्रभु, मेरा पाप सदा मेरे सामने बना रहता है ... 70
46. हे प्रभु मैं तेरा प्यासा हूँ ... 72
47. प्रभु अनाथों और विधवाओं का रक्षक है ... 73
48. प्रभु, तू मुझे क्यों त्याग देता है? ... 74
49. प्रभु मेरा शरणस्थान और गढ़ है ... 76
50. प्रभु आपकी चिन्ता करता है ... 77

51. मुझे सहायता प्रभु की ओर से मिलती है ... 79
52. हमारी कल्पना से कहीं बाहर प्रभु अति निकट है ... 80
53. यौन पाप को नकार दें ... 84
54. दूसरे पुरुष की पत्नी से दूर रहें ... 85
55. धर्मविधियाँ कितनी महत्त्वपूर्ण हैं? ... 87
56. आने वाला राज्य ... 90
57. परमेश्वर मृत्यु को सदा के लिए निगल लेगा ... 92
58. मरुभूमि आनन्द मनाएगी ... 92
59. मनुष्य जिसने हमारे दुःखों को सह लिया ... 94
60. प्रभु कहता है, मत डर ... 95
61. तुम क्यों उपवास रखते हो? ... 96
62. प्रभु का अभिषिक्त टूटे (खेदित) मन वालों को ऊँचा उठाता है ... 98
63. लोगों के लिए भविष्यद्वक्ता शोक मनाता है ... 99
64. नई वाचा ... 100
65. परमेश्वर सच्चा चरवाहा है ... 100
66. सूखी हड्डियों की घाटी (तराई) ... 105
67. दानिय्येल के साथी और धधकती आग का भट्ठा ... 106
68. मैं तुझे कैसे त्याग सकता हूँ ... 109
69. यदि परमेश्वर क्षमा करना चाहता है, तो नश्वर मनुष्य कौन है जो ना कहे ... 113
70. परमेश्वर का अटल प्रेम ... 115
71. संकट के मध्य में आनन्द ... 116
72. यीशु का जन्म ... 119

73. बालक यीशु मन्दिर में ... 120
74. शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा ... 121
75. यीशु बारह शिष्यों को बुलाता है ... 123
76. यीशु का पहाड़ी उपदेश ... 124
77. यीशु कहता है चिन्ता क्यों करते हो? ... 125
78. यीशु असाध्य रोगों को चंगा करता है ... 127
79. यीशु तूफ़ान को शान्त करता है ... 128
80. गदरेनियों में दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य ... 129
81. लकवे के रोगी को चंगा करना ... 131
82. यीशु सब्त के दिन चंगा करता है ... 132
83. यीशु अन्धे जन्मे एक मनुष्य को चंगा करता है ... 133
84. व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री ... 135
85. यीशु एक मृतक मनुष्य को फिर से जिला उठाता है ... 136
86. यीशु को काना के विवाह भोज में आमंत्रित किया गया ... 139
87. दयालु सामरी का दृष्टान्त ... 140
88. परमेश्वर के राज्य के और अधिक दृष्टान्त ... 142
89. यीशु और सामरी स्त्री ... 145
90. अपने एकमात्र पुत्र को देने में परमेश्वर का प्रेम प्रकट होता है ... 147
91. तुझे नये सिरे से जन्म लेना चाहिए ... 149
92. यहूदा यीशु के साथ विश्वासघात करता है ... 150
93. यीशु अन्तिम न्याय के बारे में शिक्षा देता है ... 150
94. गतसमनी के बाग़ में यीशु की वेदना ... 152
95. यीशु की गिरफ़्तारी ... 152
96. मृत्युदण्ड की आज्ञा ... 153
97. क्रूस पर चढ़ाया जाना ... 155

98. यीशु की मृत्यु ... 156
99. तीसरे दिन क़ब्र खाली पाई गई थी ... 159
100. ऊपर से सामर्थ ... 162
101. विश्वासियों की सहभागिता ... 163
102. विश्वासीगण अपना रुपया और सामान आपस में बाँटते हैं ... 163
103. यीशु के नाम में खड़ा हो जा और चलने लग ... 164
104. चंगाई के बड़े बड़े काम ... 165
105. मृतक को जिला उठाना ... 165
106. एक भी धर्मी नहीं ... 166
107. विश्वास ही है जो मायने रखता है ... 167
108. मनुष्य के अन्दर महा अन्तर्द्वन्द्व ... 168
109. कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा ... 169
110. मान लें कि यीशु ही प्रभु है ... 170
111. पवित्र प्रभु भोज विधि ... 171
112. यदि मैं प्रेम न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं ... 171
113. मृत्यु के ऊपर विजय ... 173
114. सन्त पौलुस पीड़ितों को शान्ति देता है ... 174
115. मिट्टी के बरतनों में धन ... 175
116. बपतिस्मा के द्वारा परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ ... 176
117. वश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ ... 176
118. कलीसिया में अगुवाई की भूमिकाएँ ... 177
119. बिशपों एवं डीकनों (सेवकों) की योग्यताएँ ... 177
120. यह स्मरण रखें कि यीशु हमारा भाई है ... 179
121. यीशु हमारे साथ सहानुभूति रखता है ... 179
122. विश्वास का अर्थ है 180
123. परमेश्वर निर्धनों को चुनता है ... 181

124. आत्मिकता और भले कार्य ... 182
125. धीरज से प्रतीक्षा करने की कला ... 184
126. घमण्डी न बनें ... 185
127. विश्वास की जाँच ... 185
128. तुम एक चुनी हुई जाति हो ... 186
129. हम भी मसीह के दुःख में भागी हों ... 187
130. बंगाल और परमेश्वर का प्रेम ... 188
131. वचन और कार्य ... 189
132. स्वर्ग में स्तुति और आराधना ... 189
133. नया आकाश और नई पृथ्वी ... 190
134. नया यरूशलेम ... 191